

Monetary Theory and Banking in India-C010505T

Question 1

English: Define Money and explain its primary functions in an economy.

Hindi: मुद्रा (Money) को परिभाषित कीजिए तथा अर्थव्यवस्था में इसके प्राथमिक कार्यों की व्याख्या कीजिए।

Answer (English):

Money is defined as anything that is generally accepted as a medium of exchange, a measure of value, a store of value, and a standard of deferred payments.

Primary Functions:

- **Medium of Exchange:** Facilitates transactions and eliminates the double coincidence of wants inherent in a barter economy.
- **Measure of Value (Unit of Account):** Provides a common denominator to express the prices of all goods and services, enabling standard accounting and comparisons.

Answer (Hindi):

मुद्रा वह कोई भी वस्तु है जिसे विनिमय के माध्यम, मूल्य के मापक, मूल्य के संचय और स्थगित भुगतानों के मान के रूप में सामान्य स्वीकृति प्राप्त होती है।

प्राथमिक कार्य:

- **विनिमय का माध्यम:** यह वस्तुओं व सेवाओं के लेन-देन को सुगम बनाता है और वस्तु-विनिमय प्रणाली (Barter system) की आवश्यकताओं के दोहरे संयोग की अनिवार्यता को समाप्त करता है।
- **मूल्य का मापक (लेखा की इकाई):** यह सभी वस्तुओं एवं सेवाओं के मूल्यों को एक उभयनिष्ठ इकाई (रुपये आदि) में व्यक्त करता है, जिससे हिसाब-किताब और तुलना संभव होती है।

Question 2

English: Explain the secondary and contingent functions of Money.

Hindi: मुद्रा के द्वितीयक (गौण) एवं आकस्मिक कार्यों को समझाइए।

Answer (English):

- **Secondary Functions:**
 - *Standard of Deferred Payments:* Facilitates credit transactions, future loan repayments, and long-term contracts.
 - *Store of Value:* Allows individuals to save purchasing power across time in a liquid form.

- *Transfer of Value*: Enables shifting purchasing power from one person or region to another.
- **Contingent Functions**: Provides a basis for the credit system, aids in the distribution of national income among factors of production, and equalizes marginal utilities for consumers.

Answer (Hindi):

- **द्वितीयक (गौण) कार्य:**
 - *स्थगित भुगतानों का मान*: यह ऋण संबंधी लेन-देन, भविष्य में किश्तों के भुगतान और दीर्घकालिक अनुबंधों को सुगम बनाता है।
 - *मूल्य का संचय*: यह व्यक्तियों को अपनी क्रय-शक्ति को तरल रूप में भविष्य के लिए सुरक्षित रखने की सुविधा देता है।
 - *मूल्य का हस्तांतरण*: यह क्रय-शक्ति को एक स्थान से दूसरे स्थान या एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति को सौंपना संभव बनाता है।
- **आकस्मिक कार्य**: यह संपूर्ण साख प्रणाली का आधार है, राष्ट्रीय आय के वितरण में मदद करता है और उपभोक्ताओं की सीमांत उपयोगिता को संतुलित करता है।

Question 3

English: State the components of Reserve Money (M_0) and Narrow Money (M_1) as defined by the RBI.

Hindi: भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) द्वारा परिभाषित आरक्षित मुद्रा (M_0) एवं संकीर्ण मुद्रा (M_1) के घटकों का उल्लेख कीजिए।

Answer (English):

- **Reserve Money (M_0):**

M_0 = Currency in Circulation + Bankers' Deposits with RBI + 'Other' Deposits with RBI

- **Narrow Money (M_1):**

M_1 = Currency with the Public + Demand Deposits with the Banking System
+ 'Other' Deposits with RBI

M_1 represents the most liquid form of money available for direct transactions in the economy.

Answer (Hindi):

- **आरक्षित मुद्रा (M_0):**

M_0 = प्रचलन में मुद्रा + आरबीआई के पास बैंकों की जमाएं + आरबीआई के पास 'अन्य' जमाएं

- **संकीर्ण मुद्रा (M_1):**

M_1 = जनता के पास मुद्रा + बैंकिंग प्रणाली के पास मांग जमाएं (Demand Deposits)
+ आरबीआई के पास 'अन्य' जमाएं

M_1 अर्थव्यवस्था में प्रत्यक्ष लेन-देन के लिए उपलब्ध सबसे तरल मुद्रा मानी जाती है।

Question 4

English: Differentiate between Broad Money (M_3) and Narrow Money (M_1) in the Indian context.

Hindi: भारतीय संदर्भ में विस्तृत मुद्रा (M_3) एवं संकीर्ण मुद्रा (M_1) में अंतर स्पष्ट कीजिए।

Answer (English):

- **Formulation:**

M_1 = Currency with Public + Demand Deposits + Other Deposits with RBI

$M_3 = M_1 + \text{Time Deposits with the Banking System}$

- **Liquidity:** M_1 is purely transaction-oriented and highly liquid, whereas M_3 is less liquid because it includes fixed term deposits.
- **Policy Focus:** The RBI monitors M_3 as the primary indicator of total monetary liquidity and potential inflationary pressures in the economy.

Answer (Hindi):

- **सूत्र संरचना:**

M_1 = जनता के पास मुद्रा + मांग जमाएं + आरबीआई के पास 'अन्य' जमाएं

$M_3 = M_1 + \text{बैंकिंग प्रणाली के पास सावधि जमाएं (Time Deposits)}$

- **तरलता:** M_1 पूर्णतः लेन-देन आधारित और अत्यंत तरल है, जबकि M_3 में सावधि (फिक्स्ड) जमा शामिल होने के कारण तरलता कम होती है।
- **नीतिगत महत्व:** आरबीआई अर्थव्यवस्था में कुल मौद्रिक तरलता और मुद्रास्फीति की निगरानी के लिए M_3 को मुख्य सूचक मानता है।

Question 5

English: Explain the composition of M_2 and M_4 monetary aggregates in India.

Hindi: भारत में मौद्रिक समुच्चय M_2 एवं M_4 के घटकों को समझाइए।

Answer (English):

- **Aggregate M_2 :**

$M_2 = M_1 + \text{Post Office Savings Bank Deposits}$

It expands M_1 by incorporating small household liquid savings held with the postal network.

- **Aggregate M_4 :**

$$M_4 = M_3 + \text{Total Post Office Deposits (excluding National Savings Certificates)}$$

It is the most comprehensive measure among traditional aggregates, encompassing both bank deposits and post office savings balances.

Answer (Hindi):

- **समुच्चय M_2 :**

$$M_2 = M_1 + \text{डाकघर बचत बैंक जमाएं}$$

यह M_1 में डाकघरों में रखी गई घरेलू छोटी बचत जमाओं को जोड़कर बनता है।

- **समुच्चय M_4 :**

$$M_4 = M_3 + \text{डाकघरों की कुल जमाएं (राष्ट्रीय बचत पत्र - NSC को छोड़कर)}$$

यह पारंपरिक मौद्रिक समुच्चयों में सबसे व्यापक माप है, जिसमें बैंक और डाकघर दोनों की जमाएं शामिल होती हैं।

Question 6

English: Discuss the changing relative importance of currency versus bank deposits in India's money supply over time.

Hindi: समय के साथ भारत की मुद्रा आपूर्ति में नकदी (Currency) बनाम बैंक जमाओं के बदलते सापेक्षिक महत्व की विवेचना कीजिए।

Answer (English):

- **Expansion of Bank Deposits:** In early decades after independence, physical currency formed a predominant share of money supply due to low banking penetration.
- **Structural Shift:** Following bank nationalization (1969/1980), branch expansion, and financial inclusion drives (e.g., PMJDY), bank deposits grew substantially faster than cash in hand.
- **Digital Penetration:** The proliferation of electronic clearing, NEFT/RTGS, and UPI has accelerated deposit turnover and institutionalized money balances, making bank deposits the dominant driver of M_3 .

Answer (Hindi):

- **बैंक जमाओं का विस्तार:** स्वतंत्रता के शुरुआती दशकों में बैंकिंग सुविधाओं के अभाव के कारण मुद्रा आपूर्ति में भौतिक नकदी (करेंसी) का अनुपात सबसे अधिक था।

- **संरचनात्मक बदलाव:** बैंकों के राष्ट्रीयकरण (1969/1980), ग्रामीण शाखाओं के विस्तार और वित्तीय समावेशन अभियानों से बैंक जमाओं में नकदी की तुलना में तीव्र वृद्धि हुई।
- **डिजिटल प्रभाव:** इलेक्ट्रॉनिक भुगतान, आरटीजीएस, एनईएफटी और यूपीआई के प्रसार ने बैंक जमाओं के लेन-देन को तेज कर दिया है, जिससे आज M_3 में बैंक जमाएं सबसे प्रमुख घटक बन गई हैं।

Question 7

English: Define High Powered Money (H). Why is it called the monetary base?

Hindi: उच्च शक्ति मुद्रा (H) को परिभाषित कीजिए। इसे मौद्रिक आधार (Monetary Base) क्यों कहा जाता है?

Answer (English):

High Powered Money (H), also denoted as Reserve Money (M_0), is the total liability of the monetary authority (RBI) and the government.

$$H = C + R$$

Where C is Currency held by the public, and R is Bank Reserves (cash in vaults and balances with RBI).

It is called the **monetary base** because commercial bank reserves serve as the fundamental foundation upon which banks expand secondary demand deposits and create multiple credit in the economy.

Answer (Hindi):

उच्च शक्ति मुद्रा (H), जिसे आरक्षित मुद्रा (M_0) भी कहते हैं, मौद्रिक प्राधिकरण (आरबीआई) और सरकार की कुल देयता होती है।

$$H = C + R$$

जहाँ C जनता के पास मुद्रा है और R बैंकों के पास नकदी आरक्षित कोष (वॉल्ट कैश व आरबीआई के पास जमा) है।

इसे **मौद्रिक आधार** इसलिए कहा जाता है क्योंकि यही वह आधारभूत नकदी है जिसके बल पर वाणिज्यिक बैंक गौण जमाओं का विस्तार करते हैं और साख का कई गुना निर्माण करते हैं।

Question 8

English: Explain the primary sources of changes in High Powered Money in India.

Hindi: भारत में उच्च शक्ति मुद्रा में परिवर्तन के प्राथमिक स्रोतों की व्याख्या कीजिए।

Answer (English):

According to the balance sheet approach of the Reserve Bank of India, changes in H arise from:

- **Net RBI Credit to the Government:** Open market purchases or financing government deficit via treasury bills increases the monetary base.
- **Net Foreign Exchange Assets of RBI:** Purchase of foreign currencies expands domestic high-powered money.
- **RBI Credit to Commercial and Cooperative Banks:** Refinancing facilities and repo lending inject reserve funds into banks.
- **Net Non-Monetary Liabilities of RBI:** An increase in RBI's capital reserves absorption reduces H .

Answer (Hindi):

भारतीय रिजर्व बैंक के तुलन-पत्र (बैलेंस शीट) उपागम के अनुसार उच्च शक्ति मुद्रा में परिवर्तन के मुख्य स्रोत हैं:

- **सरकार को शुद्ध आरबीआई साख:** सरकार की प्रतिभूतियों की खरीद या ट्रेजरी बिलों के माध्यम से तरलता डालना H को बढ़ाता है।
- **आरबीआई की शुद्ध विदेशी मुद्रा परिसंपत्तियां:** विदेशी मुद्रा खरीदने पर घरेलू बाजार में उच्च शक्ति मुद्रा की आपूर्ति बढ़ती है।
- **वाणिज्यिक व सहकारी बैंकों को आरबीआई साख:** रेपो ऋण और पुनर्वित्त सुविधाओं द्वारा बैंकों को अतिरिक्त भंडार मिलता है।
- **आरबीआई की शुद्ध गैर-मौद्रिक देयताएं:** केंद्रीय बैंक की अपनी पूंजी व भंडार बढ़ने से बाजार की H में कमी आती है।

Question 9

English: Explain the Money Multiplier (m) and state the formula connecting M and H .

Hindi: मुद्रा गुणक (m) को समझाइए तथा M और H को जोड़ने वाले सूत्र का उल्लेख कीजिए।

Answer (English):

The money multiplier measures the maximum amount of broad/narrow money that can be generated by commercial banks from each unit of high-powered money.

$$M = m \times H \quad \Rightarrow \quad m = \frac{1 + c}{c + r}$$

Where:

- $c = C/D$ is the currency-to-deposit ratio held by the public.

- $r = R/D$ is the reserve-to-deposit ratio maintained by commercial banks (CRR + excess cash).

A higher reserve requirement or higher preference for cash leakages lowers the multiplier value.

Answer (Hindi):

मुद्रा गुणक यह मापता है कि उच्च शक्ति मुद्रा की प्रत्येक इकाई के आधार पर वाणिज्यिक बैंकिंग प्रणाली कुल कितनी मुद्रा आपूर्ति का सृजन कर सकती है।

$$M = m \times H \quad \Rightarrow \quad m = \frac{1 + c}{c + r}$$

जहाँ:

- $c = C/D$ जनता का मुद्रा-जमा अनुपात है।
- $r = R/D$ बैंकों का आरक्षित-जमा अनुपात है (CRR + अतिरिक्त नकदी)।

आरक्षित अनुपात या जनता द्वारा नकदी रखने की आदत बढ़ने पर मुद्रा गुणक का मान घट जाता है।

Question 10

English: What are the key components of a formal Financial System?

Hindi: एक औपचारिक वित्तीय प्रणाली के प्रमुख घटक कौन-से हैं?

Answer (English):

An organized financial system consists of four interconnected pillars:

- **Financial Institutions:** Intermediaries like commercial banks, development banks, NBFCs, and insurance firms that mobilize savings.
- **Financial Markets:** Organized platforms (Money Market for short-term liquidity, Capital Market for long-term equity/debt).
- **Financial Instruments:** Contracts representing monetary claims (shares, debentures, commercial paper, treasury bills).
- **Financial Services:** Advisory, underwriting, custodial, clearing, and payment settlement mechanisms.

Answer (Hindi):

एक संगठित वित्तीय प्रणाली के चार प्रमुख परस्पर जुड़े घटक होते हैं:

- **वित्तीय संस्थाएं:** मध्यस्थ संस्थाएं जैसे वाणिज्यिक बैंक, विकास बैंक, एनबीएफसी और बीमा कंपनियां जो बचतों को जुटाती हैं।

- **वित्तीय बाजार:** मंच जहाँ परिसंपत्तियों का व्यापार होता है (अल्पकालिक मुद्रा बाजार एवं दीर्घकालिक पूंजी बाजार)।
- **वित्तीय साधन:** वित्तीय दावे दर्शाने वाले प्रपत्र (शेयर, डिबेंचर, वाणिज्यिक पत्र, ट्रेजरी बिल)।
- **वित्तीय सेवाएं:** साख रेटिंग, अभिगोपन (underwriting), कस्टोडियल और भुगतान निपटान सेवाएं।

Question 11

English: Define Financial Intermediaries and explain their role in resource mobilization.

Hindi: वित्तीय मध्यस्थों (Financial Intermediaries) को परिभाषित कीजिए तथा संसाधन जुटाने में उनकी भूमिका स्पष्ट कीजिए।

Answer (English):

Financial intermediaries are institutions that channel funds from surplus economic units (savers/households) to deficit economic units (investors/producers/government).

Role in Resource Mobilization:

- **Maturity Transformation:** Converting short-term retail deposits into long-term commercial loans.
- **Risk Pooling & Diversification:** Spreading small individual deposits across a diversified lending portfolio, reducing investor default risk.
- **Lower Transaction Costs:** Utilizing economies of scale to evaluate and monitor borrower creditworthiness affordably.

Answer (Hindi):

वित्तीय मध्यस्थ वे संस्थाएं हैं जो अधिशेष इकाइयों (बचतकर्ताओं/परिवारों) से धन एकत्र कर उसे घाटे वाली इकाइयों (निवेशकों/उत्पादकों/सरकार) तक पहुंचाती हैं।

संसाधन जुटाने में भूमिका:

- **परिपक्वता रूपांतरण:** अल्पावधि की छोटी जमाओं को दीर्घकालिक बड़े औद्योगिक ऋणों में बदलना।
- **जोखिम का विविधीकरण:** बचतकर्ताओं के धन को विभिन्न क्षेत्रों में निवेश कर व्यक्तिगत जोखिम को कम करना।
- **लेन-देन लागत में कमी:** पैमाने की बचत का लाभ उठाकर सस्ती दर पर ऋण जांच और निगरानी करना।

Question 12

English: Define a "Bank" as per Section 5(b) of the Banking Regulation Act, 1949.

Hindi: बैंकिंग विनियमन अधिनियम, 1949 की धारा 5(b) के अनुसार "बैंक" को परिभाषित कीजिए।

Answer (English):

Under Section 5(b) of the Banking Regulation Act, 1949, "Banking" means:

- Accepting, for the purpose of lending or investment,
- Deposits of money from the public,
- Repayable on demand or otherwise, and
- Withdrawable by cheque, draft, order, or otherwise.

An institution must perform both deposit acceptance and lending/investment to legally qualify as a banking company in India.

Answer (Hindi):

बैंकिंग विनियमन अधिनियम, 1949 की धारा 5(b) के अनुसार "बैंकिंग" का अर्थ है:

- उधार देने या विनियोजन (निवेश) के उद्देश्य से,
- जनता से मुद्रा की जमाएं स्वीकार करना,
- जो मांग पर अथवा अन्यथा प्रतिदेय (वापस करने योग्य) हों, तथा
- जिन्हें चेक, ड्राफ्ट, आदेश या अन्य किसी प्रकार से निकाला जा सके।

किसी भी संस्था के लिए जनता से जमा लेना और ऋण/निवेश करना, दोनों एक साथ पूरा करना विधिक रूप से अनिवार्य है।

Question 13

English: Explain the primary functions of Commercial Banks.

Hindi: वाणिज्यिक बैंकों के प्राथमिक कार्यों की व्याख्या कीजिए।

Answer (English):

- **Acceptance of Deposits:**
 - *Demand Deposits:* Current accounts (mainly for traders, without interest) and Savings accounts (with check facilities and interest).
 - *Time Deposits:* Fixed deposits (FD) and Recurring deposits (RD) repayable after a fixed maturity.
- **Advancing Loans and Advances:** Providing funds via cash credits, bank overdrafts, discounting commercial bills of exchange, and term loans.

Answer (Hindi):

- **जमाएं स्वीकार करना:**

- **मांग जमाएं:** चालू खाता (व्यापारियों के लिए, सामान्यतः ब्याज-रहित) और बचत खाता (चेक सुविधा व ब्याज सहित)।
- **सावधि जमाएं:** फिक्स्ड डिपॉजिट (FD) और आवर्ती जमा (RD) जो निश्चित अवधि पूरी होने पर देय होती हैं।
- **ऋण एवं अग्रिम देना:** नकद साख (Cash Credit), बैंक अधिविकर्ष (Overdraft), व्यापारिक विपत्रों की कटौती (Discounting of Bills) और मियादी ऋण प्रदान करना।

Question 14

English: Outline four secondary or agency functions of Commercial Banks.

Hindi: वाणिज्यिक बैंकों के किन्हीं चार द्वितीयक अथवा एजेंसी कार्यों की रूपरेखा दीजिए।

Answer (English):

- **Collection and Clearing:** Collecting cheques, drafts, dividends, and interest warrants on behalf of customers.
- **Execution of Standing Instructions:** Making recurring payments like insurance premiums, utility bills, and loan EMIs.
- **Purchase and Sale of Securities:** Acting as a broker/agent for purchasing shares and government bonds.
- **General Utility Services:** Providing safe deposit lockers, issuing letters of credit, bank guarantees, and foreign exchange facilities.

Answer (Hindi):

- **संग्रहण एवं समाशोधन:** ग्राहकों की ओर से चेक, ड्राफ्ट, लाभांश और ब्याज का संग्रहण करना।
- **स्थायी आदेशों का पालन:** ग्राहकों के निर्देश पर बीमा प्रीमियम, बिजली-पानी के बिल और ऋण किश्तों का नियमित भुगतान।
- **प्रतिभूतियों का क्रय-विक्रय:** ग्राहकों के लिए शेयर, बॉन्ड और सरकारी प्रतिभूतियों की खरीद-बिक्री करना।
- **सामान्य उपयोगी सेवाएं:** लॉकर सुविधा, साख पत्र (Letter of Credit), बैंक गारंटी और विदेशी मुद्रा विनिमय सेवाएं।

Question 15

English: Describe the structure of the Commercial Banking system in India.

Hindi: भारत में वाणिज्यिक बैंकिंग प्रणाली के ढांचे का वर्णन कीजिए।

Answer (English):

Commercial banks in India are broadly classified into **Scheduled** and **Non-Scheduled Banks**:

- **Public Sector Banks (PSBs):** Majority stake owned by the Government of India (e.g., SBI, Punjab National Bank).
- **Private Sector Banks:** Majority equity owned by private individuals/institutions (e.g., HDFC Bank, ICICI Bank).
- **Foreign Banks:** Operating in India as branches or wholly owned subsidiaries of foreign parent banks (e.g., Citibank, Standard Chartered).
- **Regional Rural Banks (RRBs):** Jointly owned regional institutions serving agriculture and rural enterprise.

Answer (Hindi):

भारत में वाणिज्यिक बैंकों को मुख्य रूप से **अनुसूचित** और **गैर-अनुसूचित बैंकों** में बांटा गया है:

- **सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक (PSBs):** जिनमें बहुलांश हिस्सेदारी भारत सरकार के पास होती है (जैसे एसबीआई, पीएनबी)।
- **निजी क्षेत्र के बैंक:** जिनमें अधिकांश शेयर पूंजी निजी निवेशकों के पास होती है (जैसे एचडीएफसी बैंक, आईसीआईसीआई बैंक)।
- **विदेशी बैंक:** जो विदेशी बैंक की शाखाओं या पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनियों के रूप में कार्य करते हैं (जैसे सिटीबैंक)।
- **क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक (RRBs):** ग्रामीण और कृषि क्षेत्र को ऋण देने के लिए स्थापित विशेष बैंक।

Question 16

English: What are Regional Rural Banks (RRBs)? State their ownership pattern and objectives.

Hindi: क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक (RRBs) क्या हैं? इनके स्वामित्व प्रतिरूप और उद्देश्यों का उल्लेख कीजिए।

Answer (English):

Established under the RRB Act, 1976 based on the Narasimham Working Group recommendations, RRBs cater to rural credit needs.

- **Ownership Pattern:** Equity is shared between three entities:
 - Central Government: **50%**
 - State Government: **15%**
 - Sponsor Commercial Bank: **35%**
- **Objectives:** Provide institutional credit and banking services to small and marginal farmers, agricultural laborers, artisans, and rural micro-enterprises.

Answer (Hindi):

नरसिम्हम समिति की सिफारिशों पर आरआरबी अधिनियम, 1976 के तहत ग्रामीण वित्तीय आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए इनकी स्थापना की गई।

- **स्वामित्व ढांचा:** इनकी शेयरधारिता तीन पक्षों में विभाजित होती है:
 - केंद्र सरकार: **50%**
 - संबंधित राज्य सरकार: **15%**
 - प्रवर्तक (स्पॉन्सर) वाणिज्यिक बैंक: **35%**
- **उद्देश्य:** छोटे और सीमांत किसानों, खेतिहर मजदूरों, ग्रामीण कारीगरों और छोटे उद्यमियों को आसान संस्थागत ऋण और बैंकिंग सेवाएं उपलब्ध कराना।

Question 17

English: Explain the three-tier structure of Cooperative Banks in India.

Hindi: भारत में सहकारी बैंकों की त्रि-स्तरीय संरचना को समझाइए।

Answer (English):

The rural cooperative credit system features a federal three-tier organization:

- **State Cooperative Banks (StCBs):** Apex financial institutions operating at the state level; interface with the RBI/NABARD to mobilize and refinance state funds.
- **District Central Cooperative Banks (DCCBs):** Operate at the district level; federate primary societies and provide a bridge between the apex bank and grassroot societies.
- **Primary Agricultural Credit Societies (PACS):** Operate at the village level; provide short-term crop credit and agricultural inputs directly to farmers.

Answer (Hindi):

ग्रामीण सहकारी साख प्रणाली का एक त्रि-स्तरीय ढांचा होता है:

- **राज्य सहकारी बैंक (Apex Bank):** राज्य स्तर पर शीर्ष बैंक जो नाबार्ड और आरबीआई से वित्त प्राप्त कर पूरे राज्य में वितरित करता है।
- **जिला मध्यवर्ती सहकारी बैंक (DCCB):** जिला स्तर पर कार्य करते हैं और प्राथमिक समितियों तथा राज्य सहकारी बैंक के बीच सेतु का कार्य करते हैं।
- **प्राथमिक कृषि साख समितियां (PACS):** ग्राम स्तर पर सीधे किसानों और ग्रामीणों को अल्पकालिक फसली ऋण और खाद-बीज उपलब्ध कराती हैं।

Question 18

English: Explain the process of Credit Creation by Commercial Banks with a brief numerical example.

Hindi: एक संक्षिप्त संख्यात्मक उदाहरण के साथ वाणिज्यिक बैंकों द्वारा साख सृजन की प्रक्रिया को समझाइए।

Answer (English):

Credit creation occurs because banks loan out a major fraction of primary deposits, retaining only a statutory fraction as reserve:

$$\text{Total Credit/Deposits Created} = \text{Primary Deposit} \times \frac{1}{\text{Cash Reserve Ratio (CRR)}}$$

Numerical Example: Suppose a bank receives a primary cash deposit of ₹1,000 and the CRR is 10% (0.10):

$$\text{Total Deposits} = 1000 \times \frac{1}{0.10} = ₹10,000$$

The bank retains ₹100 and lends ₹900, which gets re-deposited in the banking circuit, leading to ₹9,000 of derivative deposits.

Answer (Hindi):

साख सृजन इसलिए संभव होता है क्योंकि बैंक प्राथमिक जमा का एक निश्चित कानूनी भाग रिजर्व रखकर शेष राशि ऋण के रूप में दे देते हैं:

$$\text{कुल साख/जमा सृजन} = \text{प्राथमिक जमा} \times \frac{1}{\text{नकद आरक्षित अनुपात (CRR)}}$$

संख्यात्मक उदाहरण: यदि बैंक को ₹1,000 की प्राथमिक जमा मिलती है और CRR 10% (0.10) है:

$$\text{कुल जमाएं} = 1000 \times \frac{1}{0.10} = ₹10,000$$

बैंक ₹100 रोककर ₹900 उधार देता है, जो पुनः बैंकिंग चैनल में जमा होकर नए चक्र बनाता है और ₹9,000 की व्युत्पन्न जमाएं उत्पन्न करता है।

Question 19

English: What are the key limitations on the credit creation power of commercial banks?

Hindi: वाणिज्यिक बैंकों की साख सृजन शक्ति की प्रमुख सीमाएं क्या हैं?

Answer (English):

- **Volume of Primary Cash Deposits:** A smaller initial base of primary cash deposits curtails expansion potential.
- **Statutory Reserve Requirements:** High CRR and SLR set by the central bank directly reduce lending capacity.

- **Cash Drainage / Currency Drain:** Preference of the public to hold transactions in physical cash rather than bank deposits leaks liquidity out of the banking loop.
- **Availability of Creditworthy Borrowers:** Economic slowdowns reduce demand for profitable, bankable investment loans.

Answer (Hindi):

- **प्राथमिक नकदी जमा की मात्रा:** प्रारंभिक जमा कोष जितना कम होगा, साख विस्तार की क्षमता भी उतनी ही सीमित होगी।
- **वैधानिक आरक्षित आवश्यकताएं:** केंद्रीय बैंक द्वारा CRR और SLR की दरें बढ़ाने से बैंकों के पास उधार देने योग्य राशि कम हो जाती है।
- **नकदी रिसाव (Currency Drain):** यदि जनता बैंक में पैसा रखने के बजाय हाथ में नकद रखना पसंद करती है, तो साख विस्तार रुक जाता है।
- **विश्वसनीय उधारकर्ताओं की उपलब्धता:** मंदी के समय उद्योगपतियों और व्यापारियों द्वारा ऋण की मांग घटना।

Question 20

English: How is the total volume of Bank Credit and Money Supply determined in an economy?

Hindi: किसी अर्थव्यवस्था में बैंक साख की कुल मात्रा एवं मुद्रा आपूर्ति का निर्धारण किस प्रकार होता है?

Answer (English):

The determination of total money supply and bank credit depends on interactions among three key economic actors:

- **Central Bank Policy:** Determines high-powered money (H) via repo rates, CRR/SLR, and open market operations.
- **Commercial Banks' Behavior:** Set portfolio choices, excess reserves holdings (R/D ratio), and credit underwriting margins.
- **Public Behavior:** The public's currency-deposit preference (C/D ratio) dictates the degree of cash leakages outside the banking channel ($M = m \times H$).

Answer (Hindi):

कुल मुद्रा आपूर्ति और बैंक साख का निर्धारण तीन प्रमुख आर्थिक घटकों की पारस्परिक क्रिया पर निर्भर करता है:

- **केंद्रीय बैंक की नीति:** रेपो रेट, CRR/SLR और खुले बाजार की क्रियाओं द्वारा उच्च शक्ति मुद्रा (H) की मात्रा तय करना।

- **वाणिज्यिक बैंकों का व्यवहार:** अतिरिक्त रिजर्व रखने की प्रवृत्ति और ऋण वितरण की नीतियां।
- **जनता का व्यवहार:** जनता द्वारा नकद और बैंक जमा का अनुपात (C/D ratio) तय करना, जिससे मुद्रा गुणक प्रभावित होता है ($M = m \times H$)।

Question 21

English: What is a Development Bank? State four distinguishing features from Commercial Banks.

Hindi: विकास बैंक (Development Bank) क्या है? वाणिज्यिक बैंकों से इसकी भिन्नता दर्शाने वाली चार विशेषताएं बताइए।

Answer (English):

A development bank is a specialized multipurpose financial institution dedicated to providing medium- and long-term finance to industrial and agricultural projects where commercial risks are elevated.

Distinguishing Features:

- **Term Structure:** Provides long-term project finance; commercial banks traditionally prioritize short-term working capital.
- **Sources of Funds:** Relies on government grants, bond issues, and refinance from central institutions, rather than accepting demand deposits from the public.
- **Developmental Role:** Underwrites equities, promotes new entrepreneurship, and offers managerial consultancy.
- **Profit Motive:** Prioritizes socio-economic national development over purely maximizing commercial profit.

Answer (Hindi):

विकास बैंक एक विशेष वित्तीय संस्थान है जो औद्योगिक और आधारभूत ढांचा परियोजनाओं को मध्यम एवं दीर्घकालिक वित्तीय सहायता प्रदान करता है।

वाणिज्यिक बैंकों से अंतर:

- **ऋण की अवधि:** यह दीर्घकालिक पूंजीगत ऋण देता है; जबकि वाणिज्यिक बैंक अल्पावधि कार्यशील पूंजी पर केंद्रित होते हैं।
- **कोष के स्रोत:** जनता से मांग जमाएं लेने के बजाय सरकारी अनुदान, बॉन्ड और पुनर्वित्त पर निर्भर रहता है।
- **विकासात्मक भूमिका:** नए उद्यमियों को तकनीकी सलाह, व्यवहार्यता अध्ययन और पूंजीगत सहायता देना।

- **उद्देश्य:** केवल अधिकतम लाभ कमाने के बजाय सामाजिक-आर्थिक विकास और रोजगार सृजन को प्राथमिकता देना।

Question 22

English: What are Non-Banking Financial Companies (NBFCs)? How do they differ from Commercial Banks?

Hindi: गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियां (NBFCs) क्या हैं? ये वाणिज्यिक बैंकों से किस प्रकार भिन्न हैं?

Answer (English):

NBFCs are companies registered under the Companies Act engaged in lending, hire-purchase, leasing, and securities acquisition without holding a full banking license.

Differences from Banks:

- NBFCs **cannot accept demand deposits** (savings/current accounts); only select NBFCs can accept term deposits.
- NBFCs do **not form part of the payment and settlement system** and cannot issue cheques drawn on themselves.
- Deposit insurance protection of **DICGC is not available** to NBFC depositors.

Answer (Hindi):

एनबीएफसी (NBFCs) कंपनी अधिनियम के तहत पंजीकृत वे संस्थाएं हैं जो बिना पूर्ण बैंकिंग लाइसेंस के ऋण देने, लीजिंग, किराया-क्रय और प्रतिभूतियों में निवेश का कार्य करती हैं।

बैंकों से भिन्नता:

- एनबीएफसी **मांग जमाएं (बचत व चालू खाता) स्वीकार नहीं कर सकतीं**; केवल कुछ अधिकृत कंपनियां ही सावधि जमा ले सकती हैं।
- ये **भुगतान एवं निपटान प्रणाली का हिस्सा नहीं हैं** और अपने नाम से चेक जारी नहीं कर सकतीं।
- इनकी जमाओं पर **DICGC का बीमा संरक्षण उपलब्ध नहीं होता**।

Question 23

English: Explain the policy framework governing the allocation of Institutional Credit in India.

Hindi: भारत में संस्थागत साख के आवंटन को नियंत्रित करने वाले नीतिगत ढांचे को समझाइए।

Answer (English):

Institutional credit allocation is directed by the RBI and the government to prevent credit concentration in speculative avenues:

- **Priority Sector Lending (PSL):** Mandates domestic commercial banks to allocate at least 40% of their Adjusted Net Bank Credit (ANBC) to agriculture, MSMEs, education, housing, and weaker sections.
- **Statutory Reserve Requirements:** SLR locks bank funds into approved government securities, funding public infrastructure.
- **Credit Delivery Targets:** Specific sub-targets for small/marginal farmers (10%) and micro-enterprises (7.5%).

Answer (Hindi):

संस्थागत साख का आवंटन सट्टेबाजी रोकने और संतुलित विकास हेतु आरबीआई के नियमों द्वारा निर्देशित होता है:

- **प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र को ऋण (PSL):** सभी घरेलू बैंकों के लिए अपने कुल समायोजित ऋण (ANBC) का कम से कम 40% कृषि, एमएसएमई, शिक्षा और कमजोर वर्गों को देना अनिवार्य है।
- **वैधानिक तरलता अनुपात (SLR):** बैंकों के धन का एक निश्चित भाग सरकारी प्रतिभूतियों में निवेश करना, जिससे सरकारी विकास योजनाओं को धन मिलता है।
- **उप-लक्ष्य निर्धारण:** छोटे व सीमांत किसानों (10%) और सूक्ष्म उद्यमों (7.5%) के लिए अनिवार्य कोटा तय करना।

Question 24

English: Explain the credit conflict between the Government and the Commercial Sector (the Crowding-Out Effect).

Hindi: सरकार एवं वाणिज्यिक क्षेत्र के बीच साख के टकराव (क्राउडिंग-आउट प्रभाव) की व्याख्या कीजिए।

Answer (English):

The conflict arises when heavy fiscal deficits force the government to borrow massive funds from the banking system:

- **Resource Pre-emption:** High Statutory Liquidity Ratio (SLR) and massive government bond issuances absorb bank loanable funds.
- **Crowding Out:** Less credit remains available for private enterprise, investments, and industrial modernization.
- **Interest Rate Hardening:** Elevated public borrowing drives up market yields, making credit expensive for private firms.

Answer (Hindi):

यह समस्या तब उत्पन्न होती है जब राजकोषीय घाटा पूरा करने के लिए सरकार बाजार और बैंकिंग प्रणाली से भारी मात्रा में ऋण लेती है:

- **संसाधनों का पूर्व-अधिग्रहण:** उच्च एसएलआर (SLR) और सरकारी बॉन्डों की भारी बिक्री बैंकों के बड़े धन को सरकारी खाते में खींच लेती है।
- **निजी क्षेत्र का निष्कासन (Crowding Out):** निजी उद्यमियों और उद्योगों के लिए बैंक साख की भारी कमी हो जाती है।
- **ब्याज दरों में वृद्धि:** सरकारी मांग अधिक होने से बाजार में ब्याज दरें बढ़ जाती हैं, जिससे व्यापारिक लागत बढ़ जाती है।

Question 25

English: Discuss the problems of Inter-Sectoral Disparities in bank credit allocation in India.

Hindi: भारत में बैंक साख आवंटन में अंतर-क्षेत्रीय असमानताओं (Inter-Sectoral Disparities) की समस्याओं की विवेचना कीजिए।

Answer (English):

- **Industry vs. Agriculture:** Historically, large manufacturing units cornered the lion's share of commercial credit, while agriculture (employing nearly half the workforce) faced credit rationing.
- **Services Imbalance:** High-margin modern services (IT, telecom) secure easy institutional credit compared to unorganized rural trade.
- **Inadequate Long-Term Farm Credit:** Much of agricultural finance remains short-term crop advances rather than long-term capital formation (irrigation, storage).

Answer (Hindi):

- **उद्योग बनाम कृषि:** पारंपरिक रूप से बड़े विनिर्माण उद्योगों को साख का सबसे बड़ा हिस्सा मिला, जबकि देश की आधी आबादी को रोजगार देने वाला कृषि क्षेत्र उपेक्षित रहा।
- **सेवा क्षेत्र में असंतुलन:** संगठित आधुनिक सेवा क्षेत्र को आसानी से ऋण मिल जाता है, जबकि असंगठित व ग्रामीण कामगारों को ऋण नहीं मिल पाता।
- **दीर्घकालिक कृषि निवेश की कमी:** कृषि साख में अधिकांश भाग अल्पकालिक फसली ऋण का होता है, जबकि स्थायी संरचना (सिंचाई, कोल्ड स्टोरेज) के लिए दीर्घकालिक साख कम मिलती है।

Question 26

English: What are the Inter-Regional Disparities in the distribution of institutional credit across India?

Hindi: भारत में संस्थागत साख के वितरण में अंतर-क्षेत्रीय विषमताओं (Inter-Regional Disparities) का क्या स्वरूप है?

Answer (English):

- **Credit-Deposit (C-D) Ratio Skew:** Economically advanced Western and Southern regions (e.g., Maharashtra, Tamil Nadu) report high C-D ratios (exceeding 80%), while Eastern and North-Eastern states often record C-D ratios below 45-50%.
- **Capital Flight:** Savings mobilized by bank branches in less-developed rural regions are often deployed as advances in metropolitan business hubs.
- **Infrastructural Deficits:** Regions lacking power, transport, and industrial corridors attract negligible commercial bank credit.

Answer (Hindi):

- **साख-जमा अनुपात (C-D Ratio) में असंतुलन:** आर्थिक रूप से समृद्ध पश्चिमी व दक्षिणी राज्यों में साख-जमा अनुपात 80% से अधिक रहता है, जबकि पूर्वी और पूर्वोत्तर राज्यों में यह 45-50% से भी कम रहता है।
- **पूंजी का पलायन:** पिछड़े और ग्रामीण राज्यों से जुटाई गई बैंक बचतों को महानगरों के बड़े व्यापारिक घरानों में निवेश कर दिया जाता है।
- **बुनियादी ढांचे की कमी:** जिन क्षेत्रों में सड़कें, बिजली और उद्योग नहीं हैं, वहां वाणिज्यिक बैंक ऋण देने से कतराते हैं।

Question 27

English: Explain the disparity in credit availability between Large Corporate Borrowers and Small Borrowers (MSMEs).

Hindi: बड़े कॉर्पोरेट उधारकर्ताओं और छोटे उधारकर्ताओं (MSMEs) के बीच साख उपलब्धता की असमानता को समझाइए।

Answer (English):

- **Collateral Requirements:** Large corporations easily pledge real estate, factories, and receivables, whereas small borrowers lack formal, unencumbered collateral.
- **Information Asymmetry:** Corporates maintain audited financial statements and credit ratings, whereas small borrowers operate with informal accounting records.
- **Transaction Costs:** Banks incur higher administrative and appraisal costs per rupee when handling numerous small loans compared to a single mega-credit corporate facility.

Answer (Hindi):

- **जमानत (Collateral) की समस्या:** बड़े कॉर्पोरेट घराने आसानी से जमीन, मशीनें और शेयर गिरवी रख देते हैं, जबकि छोटे व्यापारियों के पास पर्याप्त बंधक संपत्ति नहीं होती।
- **सूचना का अभाव:** बड़ी कंपनियों के पास ऑडिटेड वित्तीय विवरण और क्रेडिट रेटिंग होती है, जबकि छोटे उद्यमियों का लेन-देन अनौपचारिक बहीखातों में होता है।
- **प्रशासनिक लागत:** कई छोटे ऋणों की जांच, वितरण और वसूली में बैंक का प्रति रुपया खर्च एक बड़े कॉर्पोरेट ऋण की तुलना में बहुत अधिक आता है।

Question 28

English: State four traditional Central Banking functions of the Reserve Bank of India.

Hindi: भारतीय रिजर्व बैंक के किन्हीं चार पारंपरिक केंद्रीय बैंकिंग कार्यों का उल्लेख कीजिए।

Answer (English):

- **Monopoly of Note Issue:** Sole authority to issue currency notes in India (excluding one-rupee notes and coins, which are issued by the Ministry of Finance).
- **Banker to the Government:** Manages the accounts, receives payments, handles public debt, and grants advances (Ways and Means Advances) to Centre and States.
- **Banker's Bank and Lender of Last Resort:** Holds statutory cash reserves of banks and extends emergency liquidity against approved collateral.
- **Custodian of Foreign Exchange Reserves:** Regulates and maintains foreign currency assets and gold reserves under FEMA.

Answer (Hindi):

- **नोट निर्गमन का एकाधिकार:** भारत में करेंसी नोट छापने का एकमात्र विधिक अधिकार (₹1 के नोट और सिक्कों को छोड़कर, जो वित्त मंत्रालय जारी करता है)।
- **सरकार का बैंकर:** केंद्र और राज्य सरकारों के खाते संभालना, उनके ऋण का प्रबंधन करना और अर्थोपाय अग्रिम (WMA) देना।
- **बैंकों का बैंक एवं अंतिम ऋणदाता:** वाणिज्यिक बैंकों का आरक्षित कोष अपने पास रखना और संकट के समय आपातकालीन वित्तीय सहायता देना।
- **विदेशी मुद्रा कोष का संरक्षक:** देश के विदेशी मुद्रा भंडार और स्वर्ण भंडार का प्रबंधन एवं संरक्षण करना।

Question 29

English: Differentiate between Quantitative and Qualitative methods of credit control used by the RBI.

Hindi: आरबीआई द्वारा प्रयुक्त साख नियंत्रण के मात्रात्मक एवं गुणात्मक उपायों में अंतर बताइए।

Answer (English):

- **Quantitative (General) Tools:** Regulate the total volume and cost of money in the entire economy without discriminating between end uses (e.g., Repo Rate, Bank Rate, CRR, SLR, Open Market Operations).
- **Qualitative (Selective) Tools:** Direct and channelize the flow of credit to specific sectors or restrict speculative uses without altering overall money volume (e.g., Margin requirements, moral suasion, credit rationing, and direct action).

Answer (Hindi):

- **मात्रात्मक (सामान्य) उपाय:** ये अर्थव्यवस्था में साख की कुल मात्रा और उसकी लागत को नियंत्रित करते हैं, बिना किसी विशेष क्षेत्र में भेदभाव किए (जैसे रेपो दर, बैंक दर, CRR, SLR, खुले बाजार की क्रियाएं)।
- **गुणात्मक (चयनात्मक) उपाय:** ये साख की कुल मात्रा को बदले बिना उसके उपयोग की दिशा तय करते हैं—सट्टेबाजी को रोकते हैं और प्राथमिक क्षेत्रों को बढ़ावा देते हैं (जैसे मार्जिन सीमाएं, नैतिक दबाव, साख की राशनिंग)।

Question 30

English: Explain Cash Reserve Ratio (CRR) and Statutory Liquidity Ratio (SLR) as instruments of credit control.

Hindi: साख नियंत्रण के साधनों के रूप में नकद आरक्षित अनुपात (CRR) एवं वैधानिक तरलता अनुपात (SLR) को समझाइए।

Answer (English):

- **Cash Reserve Ratio (CRR):** The statutory percentage of Net Demand and Time Liabilities (NDTL) that commercial banks must maintain as cash balances with the RBI. Raising CRR directly curtails banks' lendable funds.
- **Statutory Liquidity Ratio (SLR):** The percentage of NDTL that banks must maintain in liquid assets (cash, gold, or approved government securities). It ensures bank solvency and directs funds into government bonds.

Answer (Hindi):

- **नकद आरक्षित अनुपात (CRR):** बैंकों की कुल शुद्ध जमाओं (NDTL) का वह अनिवार्य प्रतिशत जो उन्हें नकद रूप में आरबीआई के पास जमा रखना पड़ता है। CRR बढ़ाने से बैंकों की ऋण देने की क्षमता तुरंत घट जाती है।
- **वैधानिक तरलता अनुपात (SLR):** NDTL का वह प्रतिशत जो बैंकों को अपने पास तरल परिसंपत्तियों (नकदी, सोना या अनुमोदित सरकारी बॉन्ड) के रूप में रखना पड़ता है। यह बैंकों की तरलता सुनिश्चित करता है।

Question 31

English: What are Open Market Operations (OMO)? How are they used to manage market liquidity?

Hindi: खुले बाजार की क्रियाएं (OMO) क्या हैं? बाजार तरलता के प्रबंधन में इनका किस प्रकार उपयोग किया जाता है?

Answer (English):

Open Market Operations refer to the deliberate sale and purchase of government securities in the open market by the RBI.

- **To Absorb Excess Liquidity (Inflationary Conditions):** The RBI sells government securities to banks; commercial bank cash balances flow into the central bank, shrinking banks' lendable reserves.
- **To Inject Liquidity (Sluggish Growth):** The RBI purchases government securities, releasing cash liquidity into the commercial banking system to support credit flow.

Answer (Hindi):

खुले बाजार की क्रियाओं से आशय केंद्रीय बैंक द्वारा बाजार में सरकारी प्रतिभूतियों की सीधी खरीद और बिक्री से है।

- **अतिरिक्त तरलता सोखने के लिए (मुद्रास्फीति के समय):** आरबीआई बैंकों को सरकारी प्रतिभूतियां बेचता है; बैंकों की नकदी आरबीआई के पास चली जाती है, जिससे ऋण देने की क्षमता घट जाती है।
- **तरलता बढ़ाने के लिए (मंदी के समय):** आरबीआई बाजार से प्रतिभूतियां खरीदता है, जिससे बैंकों के पास नई नकदी पहुंचती है और साख का विस्तार होता है।

Question 32

English: Explain the functioning of the Liquidity Adjustment Facility (LAF) through Repo and Reverse Repo Rates.

Hindi: रेपो दर एवं रिवर्स रेपो दर के माध्यम से चलनिधि समायोजन सुविधा (LAF) की कार्यप्रणाली समझाइए।

Answer (English):

The Liquidity Adjustment Facility (LAF) allows banks to adjust daily liquidity mismatches:

- **Repo Rate (Policy Rate):** The interest rate at which the RBI injects liquidity to commercial banks against pledged government securities. Raising repo rate makes bank borrowing costlier, discouraging credit expansion.
- **Reverse Repo / Standing Deposit Facility (SDF):** The rate at which the RBI absorbs overnight surplus liquidity from banks. A higher rate incentivizes banks to park idle money safely with the RBI rather than extending private loans.

Answer (Hindi):

चलनिधि समायोजन सुविधा (LAF) बैंकों को अपनी दैनिक तरलता के असंतुलन को प्रबंधित करने में सक्षम बनाती है:

- **रेपो दर (नीतिगत दर):** वह ब्याज दर जिस पर आरबीआई बैंकों को सरकारी प्रतिभूतियों के बदले अल्पकालिक ऋण देता है। रेपो दर बढ़ने से बाजार में ऋण महंगे हो जाते हैं।
- **रिवर्स रेपो / स्थायी जमा सुविधा (SDF):** वह दर जिस पर बैंक अपना अधिशेष धन आरबीआई के पास जमा करते हैं। यह दर बढ़ने पर बैंक जोखिम भरे ऋण देने के बजाय पैसा आरबीआई के पास सुरक्षित रखना पसंद करते हैं।

Question 33

English: Explain three selective credit control instruments used by the Reserve Bank of India.

Hindi: भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा उपयोग किए जाने वाले तीन चयनात्मक साख नियंत्रण साधनों की व्याख्या कीजिए।

Answer (English):

- **Fixation of Margin Requirements:** Altering the difference between market value of pledged collateral and loan advanced; raising margins on speculative commodities (like food grains or oilseeds) deters hoarding.
- **Rationing of Credit:** Setting ceilings on credit exposure for specific sensitive industries or borrowers.
- **Moral Suasion:** Persuasive communications, periodic meetings, and official directives issued by the RBI Governor advising banks to align credit expansion with national priorities.

Answer (Hindi):

- **मार्जिन आवश्यकताओं में परिवर्तन:** गिरवी रखी संपत्ति के बाजार मूल्य और दिए जाने वाले ऋण के बीच का अंतर बदलना; संवेदनशील वस्तुओं (अनाज, तिलहन) पर मार्जिन बढ़ाकर सट्टेबाजी और जमाखोरी रोकी जाती है।
- **साख की राशनिंग:** कुछ विशेष उद्योगों या क्षेत्रों के लिए बैंक ऋण की अधिकतम सीमा तय कर देना।
- **नैतिक दबाव (Moral Suasion):** बैठकों और परिपत्रों के माध्यम से आरबीआई गवर्नर द्वारा बैंकों को अनौपचारिक रूप से सलाह देना कि वे राष्ट्रीय प्राथमिकताओं के अनुसार ऋण दें।

Question 34

English: Highlight the major phases of Indian Monetary Policy since Independence.

Hindi: स्वतंत्रता के बाद से भारतीय मौद्रिक नीति के प्रमुख चरणों को रेखांकित कीजिए।

Answer (English):

- **Developmental & Planning Phase (1950s–1960s):** Accommodated Five-Year Plans, characterized by subsidized credit, interest rate controls, and deficit financing.
- **Social Banking Phase (1969–1990):** Followed nationalization; heavily relied on high statutory reserves (CRR/SLR), direct credit controls, and subsidized priority lending.
- **Deregulation & Market Phase (1991–2015):** Post-Narasimham Committee; phased out automatic monetization, lowered CRR/SLR, deregulated interest rates, and introduced LAF.
- **Flexible Inflation Targeting (2016 onwards):** Adoption of headline CPI inflation target of $4\% \pm 2\%$ governed by the Monetary Policy Committee (MPC).

Answer (Hindi):

- **नियोजन एवं विकासात्मक चरण (1950-1960 का दशक):** पंचवर्षीय योजनाओं के वित्तपोषण, ब्याज दर नियंत्रण और घाटे के वित्तपोषण पर आधारित।
- **सामाजिक बैंकिंग चरण (1969-1990):** राष्ट्रीयकरण के बाद उच्च CRR/SLR, अनिवार्य प्राथमिक साख कोटा और ब्याज दरों के कठोर विनियमन का दौर।
- **उदारीकरण चरण (1991-2015):** नरसिम्हम समिति के बाद प्रत्यक्ष साख नियंत्रण समाप्त, CRR/SLR में कटौती, ब्याज दरों का निर्धारण बाजार पर छोड़ना और LAF की शुरुआत।
- **लचीला मुद्रास्फीति लक्ष्यीकरण (2016 से वर्तमान):** मौद्रिक नीति समिति (MPC) द्वारा उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (CPI) आधारित $4\% \pm 2\%$ मुद्रास्फीति का विधिक लक्ष्य तय करना।

Question 35

English: What is the Monetary Policy Framework Agreement (2015/2016) and how does the MPC function?

Hindi: मौद्रिक नीति ढांचा समझौता (2015/2016) क्या है तथा मौद्रिक नीति समिति (MPC) किस प्रकार कार्य करती है?

Answer (English):

The framework statutory agreement amended the RBI Act, 1934 to mandate primary focus on price stability while keeping in mind the objective of growth:

- **Inflation Target:** Target headline CPI inflation at **4%** with a tolerance band of $\pm 2\%$ (range of 2% to 6%).
- **Monetary Policy Committee (MPC):** A 6-member body consisting of 3 RBI officials (including the Governor) and 3 external government-appointed experts.

- **Decision Rule:** Decisions are taken by majority vote, with the RBI Governor holding a casting vote in the event of a tie.

Answer (Hindi):

आरबीआई अधिनियम, 1934 में संशोधन करके मुद्रास्फीति नियंत्रण को प्राथमिक विधिक लक्ष्य बनाया गया:

- **मुद्रास्फीति लक्ष्य:** खुदरा उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (CPI) आधारित मुद्रास्फीति को 4% पर बनाए रखना (सहनशीलता सीमा $\pm 2\%$, यानी 2% से 6% के बीच)।
- **मौद्रिक नीति समिति (MPC):** 6 सदस्यों की समिति जिसमें 3 सदस्य आरबीआई से (गवर्नर सहित) और 3 स्वतंत्र विशेषज्ञ केंद्र सरकार द्वारा नियुक्त होते हैं।
- **निर्णय प्रक्रिया:** निर्णय बहुमत से होते हैं; मत बराबर होने पर आरबीआई गवर्नर के पास निर्णायक (Casting) वोट का अधिकार होता है।

Question 36

English: Define Interest Rate and explain its basic economic determinants according to the Loanable Funds Theory.

Hindi: ब्याज दर को परिभाषित कीजिए तथा ऋणयोग्य कोष सिद्धांत (Loanable Funds Theory) के अनुसार इसके मुख्य निर्धारकों को समझाइए।

Answer (English):

The rate of interest is the price paid by a borrower to a lender for the use of capital/funds over a specified time horizon.

According to the Loanable Funds Theory, the equilibrium interest rate is determined at the intersection of supply and demand for loanable funds:

- **Supply of Loanable Funds:** Arises from domestic private savings, business dishoarding, and bank credit creation (sloping upward with interest rates).
- **Demand for Loanable Funds:** Driven by industrial investment demand, household consumption borrowing, and government budgetary deficits (sloping downward with interest rates).

Answer (Hindi):

ब्याज दर वह मूल्य है जो उधारकर्ता द्वारा ऋणदाता को पूंजी के उपयोग के बदले एक निश्चित समय अवधि के लिए चुकाया जाता है।

ऋणयोग्य कोष सिद्धांत के अनुसार संतुलन ब्याज दर ऋणयोग्य कोषों की मांग और आपूर्ति की समानता से तय होती है:

- **ऋणयोग्य कोषों की आपूर्ति:** यह व्यक्तियों की बचत, व्यापारिक निष्क्रिय कोषों को निकालने और बैंक साख सृजन से बनती है (ब्याज दर बढ़ने पर आपूर्ति बढ़ती है)।
- **ऋणयोग्य कोषों की मांग:** यह औद्योगिक निवेश, व्यक्तिगत उपभोग व्यय और सरकार के राजकोषीय घाटे की पूर्ति से उत्पन्न होती है (ब्याज दर घटने पर मांग बढ़ती है)।

Question 37

English: What is a "Bond Rate" (Bond Yield) and how is it related to bond market prices?

Hindi: "बॉन्ड दर" (बॉन्ड यील्ड) क्या है तथा इसका बॉन्ड के बाजार मूल्य के साथ क्या संबंध होता है?

Answer (English):

The bond rate or yield reflects the effective annualized return earned by an investor on a debt security relative to its current market price.

$$\text{Current Yield} = \frac{\text{Annual Coupon Payment}}{\text{Market Price of the Bond}}$$

Inverse Relationship: Bond prices and bond yields move in opposite directions. When market interest rates rise, existing bonds with lower coupons become less attractive; their market prices fall until their effective yield aligns with prevailing market interest rates.

Answer (Hindi):

बॉन्ड दर या यील्ड (Yield) वह वार्षिक प्रतिफल है जो एक निवेशक को बॉन्ड के वर्तमान बाजार मूल्य के आधार पर प्राप्त होता है।

$$\text{बॉन्ड यील्ड} = \frac{\text{वार्षिक कूपन (ब्याज) भुगतान}}{\text{बॉन्ड का बाजार मूल्य}}$$

विपरीत संबंध: बॉन्ड की कीमतों और बॉन्ड यील्ड में हमेशा उल्टा संबंध होता है। जब अर्थव्यवस्था में ब्याज दरें बढ़ती हैं, तो पुराने बॉन्ड के बाजार मूल्य गिर जाते हैं ताकि उनकी प्रभावी यील्ड नई बाजार दरों के बराबर हो सके।

Question 38

English: Explain "Bill Rate" in the money market. Distinguish between Treasury Bills and Commercial Bills.

Hindi: मुद्रा बाजार में "बिल दर" (Bill Rate) को समझाइए। ट्रेजरी बिल एवं वाणिज्यिक बिल में अंतर स्पष्ट कीजिए।

Answer (English):

The Bill Rate is the annualized discount rate at which short-term negotiable money market debt instruments are bought and sold before maturity.

Differences:

- **Treasury Bills (T-Bills):** Short-term debt issued by the Central Government via RBI (91-day, 182-day, 364-day) to finance temporary cash mismatches. Zero sovereign default risk.
- **Commercial Bills:** Short-term trade bills drawn by sellers on buyers to finance commercial inventory movement. Involve credit risk based on the commercial parties involved.

Answer (Hindi):

बिल दर वह वार्षिक बट्टा (Discount) दर है जिस पर अल्पकालिक विनिमेय साख पत्रों को उनकी परिपक्वता से पहले मुद्रा बाजार में खरीदा और भुनाया जाता है।

अंतर:

- **ट्रेजरी बिल (T-Bills):** केंद्र सरकार की ओर से आरबीआई द्वारा जारी किए जाने वाले अल्पकालिक ऋण पत्र (91, 182 और 364 दिन); इनमें कोई वित्तीय जोखिम नहीं होता।
- **वाणिज्यिक बिल:** व्यापारियों द्वारा माल की बिक्री पर खरीदार के नाम लिखे जाने वाले व्यापारिक हुंडी/बिल; इनमें व्यावसायिक जोखिम शामिल होता है।

Question 39

English: What are Bank Deposit Rates and Lending Rates? Explain the concept of Net Interest Margin (NIM).

Hindi: बैंक जमा दरें एवं ऋण दरें क्या हैं? शुद्ध ब्याज मार्जिन (NIM) की अवधारणा को समझाइए।

Answer (English):

- **Deposit Rate:** The interest rate paid by commercial banks to depositors on savings and term deposit accounts.
- **Lending Rate:** The interest rate charged by banks on advances extended to borrowers (determined using benchmarks like external repo-linked benchmark rates).
- **Net Interest Margin (NIM):** The measure of a bank's spread profitability:

$$\text{NIM} = \frac{\text{Total Interest Income Earned} - \text{Total Interest Expenses Paid}}{\text{Total Earning Assets}}$$

Answer (Hindi):

- **जमा दर:** वह ब्याज दर जो बैंक बचत और सावधि खातों पर ग्राहकों को चुकाते हैं।
- **ऋण दर:** वह ब्याज दर जो बैंक ग्राहकों को दिए जाने वाले ऋणों पर वसूलते हैं (वर्तमान में बाहरी रेपो बेंचमार्क से जुड़ी)।
- **शुद्ध ब्याज मार्जिन (NIM):** यह बैंक की ब्याज आधारित लाभप्रदता का पैमाना है:

$$\text{NIM} = \frac{\text{अर्जित कुल ब्याज आय} - \text{चुकाया गया कुल ब्याज व्यय}}{\text{कुल आय-सर्जक परिसंपत्तियां}}$$

Question 40

English: What is meant by the "Administered Interest Rate" structure and why was it deregulated in India?

Hindi: "प्रशासित ब्याज दर" (Administered Interest Rate) प्रणाली से क्या आशय है तथा भारत में इसे विनियमित (मुक्त) क्यों किया गया?

Answer (English):

An administered interest rate structure is an operational system where deposit and lending rates are fixed directly by the central bank and government rather than determined by free market forces.

Reasons for Deregulation (1990s):

- Fixed rates caused financial repression, yielding negative real returns for savers.
- Distorted resource allocation and caused inefficiency in credit deployment.
- Deregulation allowed competitive pricing, improved monetary transmission, and enabled banks to price loans according to borrower risk profiles.

Answer (Hindi):

प्रशासित ब्याज दर प्रणाली वह व्यवस्था है जहाँ बैंकों की जमा और ऋण दरों का निर्धारण बाजार की मांग और आपूर्ति द्वारा न होकर सीधे केंद्रीय बैंक और सरकार द्वारा किया जाता है।

मुक्त (Deregulate) करने के कारण:

- इससे बचतकर्ताओं को मुद्रास्फीति की तुलना में नकारात्मक वास्तविक प्रतिफल मिलता था।
- पूंजी का अकुशल आवंटन होता था और बैंकों की लाभप्रदता घटती थी।
- दरों को बाजार आधारित करने से बैंकिंग क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा बढ़ी, मौद्रिक नीतियों का असर तेज हुआ और जोखिम के अनुसार ब्याज तय करने की छूट मिली।

Question 41

English: Define Inflation. Distinguish between Demand-Pull Inflation and Cost-Push Inflation.

Hindi: मुद्रास्फीति (Inflation) को परिभाषित कीजिए। मांग-प्रेरित (Demand-Pull) एवं लागत-जनित (Cost-Push) मुद्रास्फीति में अंतर स्पष्ट कीजिए।

Answer (English):

Inflation is a persistent and sustained increase in the general price level of goods and services in an economy over a period of time, causing a erosion of purchasing power.

- **Demand-Pull Inflation:** Occurs when aggregate demand for goods and services outpaces aggregate supply ("too much money chasing too few goods"), driven by monetary expansion, high government deficit, or consumer booms.
- **Cost-Push Inflation:** Triggered by abrupt increases in the cost of production (e.g., wage spikes, crude oil shocks, import tariffs, raw material shortages), shifting aggregate supply inward.

Answer (Hindi):

मुद्रास्फीति किसी अर्थव्यवस्था में वस्तुओं और सेवाओं के सामान्य मूल्य स्तर में होने वाली निरंतर और सतत वृद्धि है, जिससे मुद्रा की क्रय-शक्ति घट जाती है।

- **मांग-प्रेरित मुद्रास्फीति:** जब कुल मांग अर्थव्यवस्था की कुल उत्पादन क्षमता से अधिक हो जाती है ("कम वस्तुओं के पीछे अधिक मुद्रा दौड़ना"); यह घाटे के बजट या साख विस्तार से होती है।
- **लागत-जनित मुद्रास्फीति:** जब उत्पादन लागतों (कच्चे तेल के दाम, मजदूरी में वृद्धि, कच्चे माल की कमी या अप्रत्यक्ष कर) में वृद्धि के कारण आपूर्ति वक्र पीछे खिसक जाता है।

Question 42

English: Explain the Fisher Effect and differentiate between Nominal Interest Rate and Real Interest Rate.

Hindi: फिशर प्रभाव (Fisher Effect) को समझाइए तथा सांकेतिक ब्याज दर (Nominal) एवं वास्तविक ब्याज दर (Real) में अंतर स्पष्ट कीजिए।

Answer (English):

- **Nominal Interest Rate (i):** The stated monetary interest rate paid on a deposit or loan without adjustment for purchasing power changes.
- **Real Interest Rate (r):** The interest rate corrected for the impact of inflation:

$$r \approx i - \pi \quad (\text{where } \pi \text{ is the inflation rate})$$

- **Fisher Effect:** Formulated by Irving Fisher, it posits that the nominal interest rate moves one-for-one with expected inflation over the long run to keep the real return constant ($i = r + \pi^e$).

Answer (Hindi):

- **सांकेतिक ब्याज दर (i):** बैंक या ऋण अनुबंध में उल्लिखित प्रत्यक्ष ब्याज दर, जिसमें मुद्रास्फीति का कोई समायोजन नहीं होता।
- **वास्तविक ब्याज दर (r):** क्रय-शक्ति में बदलाव हेतु समायोजित दर:

$$r \approx i - \pi \quad (\text{जहाँ } \pi \text{ मुद्रास्फीति दर है})$$

- **फिशर प्रभाव:** इरविंग फिशर के अनुसार, दीर्घकाल में वास्तविक ब्याज दर को स्थिर रखने के लिए सांकेतिक ब्याज दर प्रत्याशित मुद्रास्फीति की दर के अनुपात में बढ़ती या घटती है ($i = r + \pi^e$)।

Question 43

English: How does Inflation adversely impact Creditors and Debtors?

Hindi: मुद्रास्फीति ऋणदाताओं (Creditors) एवं देनदारों/उधारकर्ताओं (Debtors) को किस प्रकार प्रभावित करती है?

Answer (English):

Unanticipated inflation creates arbitrary redistribution of wealth:

- **Debtors (Gainers):** Borrowers repay loans in currency that possesses lower real purchasing power than when the loan was originally disbursed.
- **Creditors/Lenders (Losers):** Lenders receive the agreed fixed principal and interest back, but the returned money buys fewer real goods and services.

If inflation is anticipated, creditors charge higher nominal interest rates incorporating an inflation premium to offset this loss.

Answer (Hindi):

अप्रत्याशित मुद्रास्फीति धन का मनमाना पुनर्वितरण करती है:

- **देनदार/उधारकर्ता (लाभार्थी):** ऋण लेने वाले उस मुद्रा में भुगतान करते हैं जिसका वास्तविक मूल्य ऋण लेते समय की तुलना में घट चुका होता है।
- **ऋणदाता/साहूकार (हानि उठाने वाले):** ऋणदाताओं को वही निश्चित धनराशि वापस मिलती है, परंतु उससे खरीदी जा सकने वाली वस्तुओं की मात्रा घट जाती है।

यदि मुद्रास्फीति का पूर्व-अनुमान हो, तो ऋणदाता पहले से ही अधिक सांकेतिक ब्याज दर तय कर लेते हैं।

Question 44

English: Explain the concept of "Inflationary Expectations" and how they fuel the wage-price spiral.

Hindi: "मुद्रास्फीतिकारी प्रत्याशाओं" (Inflationary Expectations) की अवधारणा को समझाइए तथा यह किस प्रकार मजदूरी-मूल्य चक्रव्यूह को जन्म देती है?

Answer (English):

Inflationary expectations represent the subjective beliefs held by households and businesses regarding future inflation rates:

- **Wage Demands:** If workers anticipate high future prices, they demand higher nominal wages to protect real living standards.
- **Cost Passing:** Employers concede to wage hikes and subsequently raise their output prices to preserve profit margins.
- **Wage-Price Spiral:** Higher consumer prices trigger further wage demands, embedding self-fulfilling inflation deep into the economic fabric.

Answer (Hindi):

मुद्रास्फीतिकारी प्रत्याशाओं से आशय भविष्य में मूल्य वृद्धि को लेकर आम जनता और उद्यमियों के अनुमान और विश्वास से है:

- **मजदूरी वृद्धि की मांग:** जब कामगारों को लगता है कि भविष्य में महंगाई बढ़ेगी, तो वे अपने जीवन स्तर को बनाए रखने के लिए अधिक मजदूरी मांगते हैं।
- **लागत को आगे बढ़ाना:** उद्योगपति बढ़ी हुई मजदूरी लागत को वसूलने के लिए अपनी वस्तुओं के दाम और बढ़ा देते हैं।
- **मजदूरी-मूल्य चक्र:** बढ़े हुए दाम पुनः अधिक वेतन की मांग पैदा करते हैं, जिससे महंगाई अपने आप को पोषित करने वाले चक्रव्यूह में फंस जाती है।

Question 45

English: What are the adverse economic effects of persistent high Inflation on Domestic Savings and Capital Formation?

Hindi: घरेलू बचतों एवं पूंजी निर्माण पर निरंतर उच्च मुद्रास्फीति के प्रतिकूल आर्थिक प्रभावों की विवेचना कीजिए।

Answer (English):

- **Erosion of Real Savings:** Low or negative real interest rates discourage households from keeping financial assets in bank deposits.
- **Diversion to Non-Productive Assets:** Households park funds into unproductive physical hedges like gold, real estate, and jewelry rather than productive financial instruments.
- **Uncertainty in Investment Planning:** High, volatile price levels cloud future cash-flow projections, discouraging long-term industrial investment and stalling capital formation.

Answer (Hindi):

- **वास्तविक बचतों का क्षरण:** जब ब्याज दरें मुद्रास्फीति से कम हो जाती हैं, तो लोगों को बैंक में पैसा रखने पर घाटा होता है, जिससे वित्तीय बचतों में गिरावट आती है।
- **अनुत्पादक परिसंपत्तियों में पलायन:** लोग अपना धन बैंकों या उद्योगों में लगाने के बजाय सोने, आभूषणों और जमीन में सुरक्षित रखने लगते हैं।
- **निवेश में अनिश्चितता:** मूल्य अस्थिरता के कारण भावी मुनाफे का सटीक अनुमान लगाना कठिन हो जाता है, जिससे दीर्घकालिक औद्योगिक निवेश और पूंजी निर्माण रुक जाता है।

Question 46

English: Explain how the RBI uses interest rate hikes to anchor Inflationary Expectations in an economy.

Hindi: अर्थव्यवस्था में मुद्रास्फीतिकारी प्रत्याशाओं को नियंत्रित करने हेतु आरबीआई ब्याज दर वृद्धि का किस प्रकार उपयोग करता है?

Answer (English):

- **Transmission Channel:** When inflation expectations surge, the Monetary Policy Committee increases the Repo Rate.
- **Dampening Demand:** Commercial banks pass on rate hikes to loans and deposits; elevated borrowing costs curb credit-financed consumption (automobiles, housing) and corporate capital expenditure.
- **Signaling Credibility:** A firm hike signals central bank resolve to maintain macroeconomic price stability, resetting market psychological expectations and preventing wage-price escalation.

Answer (Hindi):

- **नीतिगत संचरण:** जब महंगाई की उम्मीदें बढ़ने लगती हैं, तो मौद्रिक नीति समिति रेपो दर में वृद्धि कर देती है।
- **मांग में कमी:** बैंक अपने ऋण महंगे कर देते हैं; जिससे ईएमआई (EMI) बढ़ जाती है और उपभोक्ता खर्च व कॉर्पोरेट निवेश धीमा पड़ जाता है।
- **विश्वसनीयता का संदेश:** सख्त मौद्रिक कदम बाजार को यह स्पष्ट संकेत देते हैं कि केंद्रीय बैंक मूल्य स्थिरता के प्रति गंभीर है, जिससे मनोवैज्ञानिक प्रत्याशाएं शांत हो जाती हैं।

Question 47

English: Explain the difference between Headline Inflation and Core Inflation in India.

Hindi: भारत में हेडलाइन मुद्रास्फीति (Headline Inflation) एवं कोर मुद्रास्फीति (Core Inflation) में अंतर स्पष्ट कीजिए।

Answer (English):

- **Headline Inflation:** Measured using the comprehensive all-commodities Consumer Price Index (CPI-Combined). It captures the entire basket of goods and services, including volatile components like food and fuel.
- **Core Inflation:** Calculated by stripping out the highly volatile categories of **Food and Beverages** and **Fuel and Light** from the overall index:

$$\text{Core Inflation} = \text{Headline CPI} - (\text{Food} + \text{Fuel})$$

It provides a clearer signal of underlying long-term demand pressures.

Answer (Hindi):

- **हेडलाइन मुद्रास्फीति:** यह व्यापक उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (CPI) पर आधारित संपूर्ण मुद्रास्फीति है, जिसमें भोजन और ईंधन जैसे अत्यधिक अस्थिर घटक भी शामिल होते हैं।
- **कोर मुद्रास्फीति:** जब कुल सूचकांक में से अत्यधिक उतार-चढ़ाव वाले **खाद्य पदार्थों** और **ईंधन** की मदों को घटा दिया जाता है, तो प्राप्त सूचक को कोर मुद्रास्फीति कहते हैं:

$$\text{कोर मुद्रास्फीति} = \text{हेडलाइन CPI} - (\text{खाद्य} + \text{ईंधन})$$

यह अर्थव्यवस्था में मांग के वास्तविक दीर्घकालिक दबाव को दर्शाती है।

Question 48

English: What is Monetary Transmission? State two major bottlenecks in the Indian banking system that delay it.

Hindi: मौद्रिक संचरण (Monetary Transmission) क्या है? भारतीय बैंकिंग प्रणाली में इसमें बाधा डालने वाली दो प्रमुख कमियों का उल्लेख कीजिए।

Answer (English):

Monetary transmission is the operational process through which central bank policy rate adjustments (Repo rate) are passed down through commercial banks into retail deposit and lending rates.

Bottlenecks in India:

- **Rigidity of Fixed-Rate Term Deposits:** A large chunk of bank funds consists of term deposits locked at high fixed rates; banks resist cutting lending rates until these deposits mature.
- **Competition from Small Savings Schemes:** Government-backed small savings (PPF, Sukanya Samriddhi, Post Office deposits) offer administered rates, constraining banks from reducing deposit rates freely.

Answer (Hindi):

मौद्रिक संचरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा केंद्रीय बैंक की रेपो दर में किए गए बदलाव वाणिज्यिक बैंकों की जमा और ऋण दरों तक पहुंचते हैं।

भारत में प्रमुख बाधाएं:

- **सावधि जमाओं की कठोरता:** बैंकों के पास जमाओं का बड़ा हिस्सा पहले से तय उच्च दरों पर फिक्स होता है; जब तक ये परिपक्व नहीं होते, बैंक अपनी ऋण दरें घटाने से बचते हैं।
- **लघु बचत योजनाओं से प्रतिस्पर्धा:** डाकघर और पीपीएफ जैसी सरकारी योजनाओं पर मिलने वाले स्थिर ब्याज के कारण बैंक अपनी जमा दरें बहुत कम नहीं कर पाते।

Question 49

English: Explain how high inflation impacts a country's Foreign Exchange Rate and Trade Balance.

Hindi: उच्च मुद्रास्फीति किसी देश की विदेशी विनिमय दर एवं व्यापार संतुलन को किस प्रकार प्रभावित करती है?

Answer (English):

- **Export Competitiveness Loss:** Persistent domestic inflation makes home-produced goods expensive in foreign markets relative to competitors, dampening export volumes.
- **Surge in Imports:** Imported goods become relatively cheaper, increasing consumer and industrial import demand.
- **Exchange Rate Depreciation:** A widening trade deficit, coupled with purchasing power parity (PPP) dynamics, creates downward pressure on the domestic currency (depreciation of the Rupee against foreign currencies).

Answer (Hindi):

- **निर्यात प्रतिस्पर्धा में कमी:** घरेलू बाजार में महंगाई बढ़ने से विदेशों में हमारे उत्पाद महंगे हो जाते हैं, जिससे निर्यातों में भारी गिरावट आती है।
- **आयातों में वृद्धि:** विदेशी सामान अपेक्षाकृत सस्ता लगने के कारण आयातों में तीव्र वृद्धि होती है।
- **रुपये के मूल्य में गिरावट (अवमूल्यन):** व्यापार घाटा बढ़ने और क्रय-शक्ति समता (PPP) के सिद्धांतों के कारण विदेशी मुद्रा बाजार में घरेलू मुद्रा (रुपये) का मूल्य गिर जाता है।

Question 50

English: Differentiate between Bank Rate and Repo Rate in the context of RBI's monetary management.

Hindi: आरबीआई के मौद्रिक प्रबंधन के संदर्भ में बैंक दर (Bank Rate) एवं रेपो दर (Repo Rate) में अंतर स्पष्ट कीजिए।

Answer (English):

- **Repo Rate:**
 - Short-term liquidity injection mechanism (typically overnight to 14 days) under LAF.
 - Strictly requires collateral of approved government securities.
 - Acts as the primary anchor for daily money market rates.
- **Bank Rate:**
 - Long-term lending rate under Section 49 of the RBI Act.
 - Does not involve direct collateral/repurchase agreements; used for discounting or rediscounting eligible bills of exchange.
 - Currently serves as a penal rate aligned with MSF to penalize reserve defaults (CRR/SLR shortfalls).

Answer (Hindi):

- **रेपो दर (Repo Rate):**
 - चलनिधि समायोजन सुविधा (LAF) के तहत अल्पकालिक (1 से 14 दिन) तरलता प्रदान करने की दर है।
 - इसके लिए सरकारी प्रतिभूतियों को गिरवी रखना अनिवार्य होता है।
 - यह दैनिक मुद्रा बाजार का मुख्य नीतिगत सूचक है।
- **बैंक दर (Bank Rate):**
 - आरबीआई अधिनियम की धारा 49 के तहत दीर्घकालिक पुनर्वित्त की आधिकारिक दर है।
 - इसमें प्रतिभूतियों का पुनर्खरीद समझौता नहीं होता, बल्कि बिलों को बट्टे पर भुनाया जाता है।
 - वर्तमान में यह मुख्य रूप से बैंकों पर CRR/SLR उल्लंघन पर दंडात्मक ब्याज लगाने का आधार है।